हुए रानी को पहचानकर अतीत में देखे हुए रानी की याद होती है, इसलिए प्रत्यभिज्ञा इन्द्रियजन्य और स्मृतिजन्य प्रत्यक्ष ज्ञान है

Date 15/04/18

2. अनुमान —

अनुमान शब्द अनु एवं मान शब्दों के योग से बना है। अनु का अर्थ होता है बाद में ~~तथा~~ मान का अर्थ होता है ज्ञान, अर्थात् अनुमान का अर्थ होगा पश्चातवर्ती ज्ञान। न्याय सूत्र में तत्पूर्वकम् अनुमानं द्वारा अनुमान की परिभाषा दी गई है तत्पूर्वकम का तात्पर्य है तत् (बाद) पूर्वकम् (पहले) अर्थात् अनुमान वह

25 Sunday

है जो पहले के पश्चात आता है। दूसरे शब्दों में पहला प्रमाण अर्थात् प्रत्यक्ष के पश्चात आने वाला प्रमाण अनुमान है। न्याय दर्शन में अनुमान की परिभाषा दी गई है। अनुमिति करणं अनुमानं। अनुमिति का जो करण (साधन) है वही अनुमान है उसे अन्वीक्षा भी कहा जाता है। अन्वीक्षा का तात्पर्य है अनु (बाद में) तथा ~~ईक्षा~~ (देखना) अर्थात् बाद में ईक्षा

देखना। अर्थात एक बात के बाद देखने वाला दूसरा ज्ञान अन्वीक्षा है,

(अनुमान के अंग)

अनुमान के आवश्यक अंग है
i) हेतु ii) साध्य तथा iii) पक्ष (प्रतिज्ञा)

~~अनुमान के प्रकार~~

~~हेतु तथा~~ iii) पक्ष → हेतु तथा साध्य जिस स्थल पर पाये जाते है उसे पक्ष कहा जाता है, उदाहरण - पर्वत पर धुआँ तथा आग। पक्ष 'पर्वत' हेतु 'धुआँ' साध्य आग।

i) हेतु – हेतु वह बात जो असंदिग्ध घटना एवं विषय है जिसका प्रत्यक्ष वर्तमान मैं होता है, तथा जिसके द्वारा साध्य को जाना जाता है,

ii) साध्य → जिस अज्ञात या संदिग्ध घटना या विषय को जानने का प्रयास किया जाता है उसी को साध्य कहा जाता है,

18 MARCH

27 Wk 13 • 086 Day
TUESDAY

March 2018

Wk	M	T	W	T	F	S	S
09				1	2	3	4
10	5	6	7	8	9	10	11
11	12	13	14	15	16	17	18
12	19	20	21	22	23	24	25
13	26	27	28	29	30	31	

अनुमान के प्रकार

अनुमान का वर्गीकरण न्याय दर्शन के द्वारा तीन रूपों में किया गया है-

1. प्रयोजन के आधार पर
2. कारणता के आधार पर
3. संबंध के आधार पर

1. प्रयोजन के आधार पर अनुमान को दो प्रकार का माना गया है-

i) स्वार्थानुमान
ii) परार्थानुमान

2. कारणता के आधार पर अनुमान तीन है

i) पूर्ववत्
ii) शेषवत्
iii) सामान्यतोदृष्ट

3. संबंध के आधार पर अनुमान तीन है,

i) केवलान्वयी
ii) केवल व्यतिरेकी
iii) अन्वय व्यतिरेकी

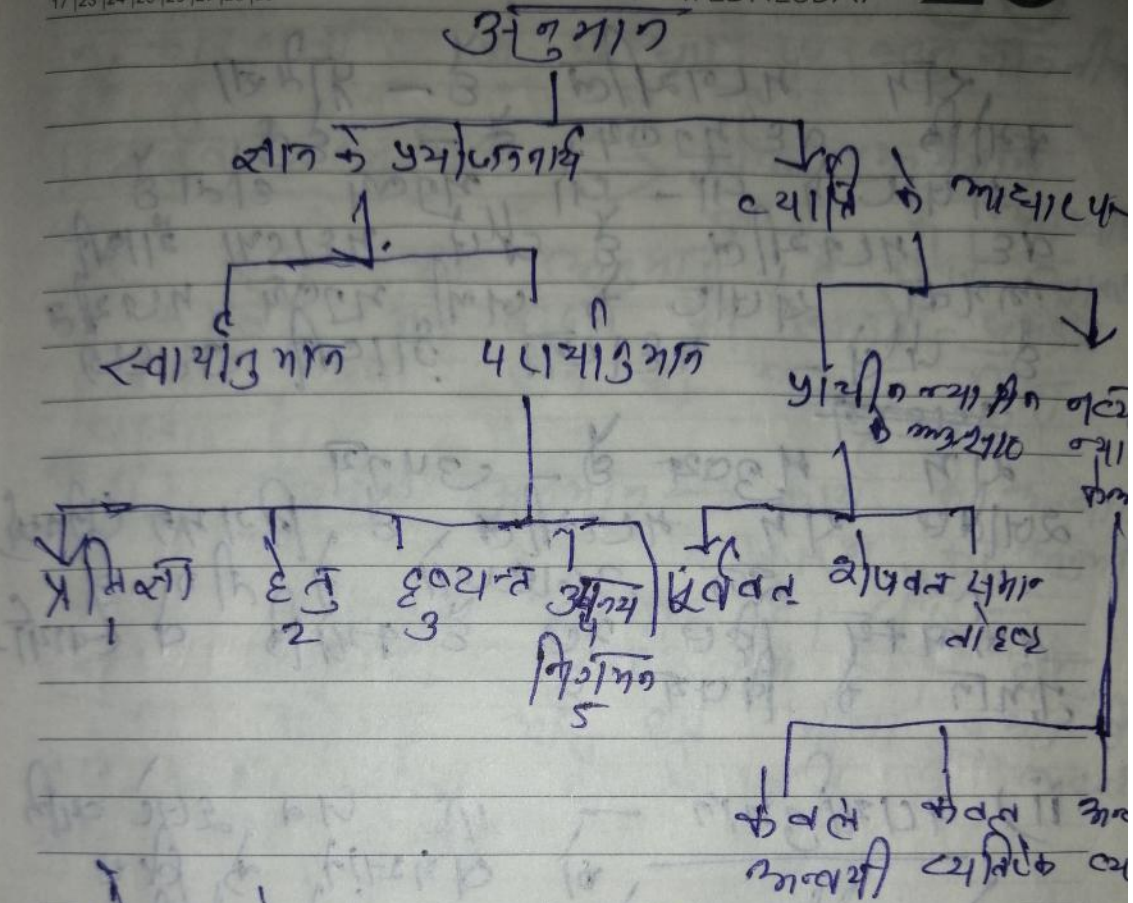

1. प्रयोजन के आधार पर अनुमान—

(i) स्वार्थानुमान → स्वार्थानुमान वह है जो स्वयं ज्ञान पाने के लिए किया जाता है। जब व्यक्ति केवल अपने हित के लिए अनुमान करता है तब वह अनुमान स्वार्थ स्वार्थानुमान होता है। जैसे- मैं जानना चाहता हूँ कि राम मरणशील है इसके लिए मैं निम्नलिखित रूप से अनुमान करता हूँ।